बी0 ए0 प्रथम वर्ष
संस्कृत साहित्य (प्रथम प्रश्न पत्र)

लघुउत्तरीय प्रश्न :–

1. महाकवि कालीदास का जीवन परिचय दीजिए।
2. कुमारसम्भव के पंचम सर्ग की काव्यगत विशेषताएं संक्षेप में बताइए।
3. "शरीरमाद्यं धर्मं साधनम्" इस सूक्ति की व्याख्या कीजिए।
4. पार्वती के तपोवन की विशेषताएं वर्णित कीजिए।
5. "माघे सन्ति त्रयोगुणः" इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।
6. "शिशुपाल वध" महाकाव्य के प्रथम सर्ग की कथावस्तु की विवेचना कीजिए।
7. "शिशुपाल वध" का नायक कौन है? संक्षेप में वर्णन कीजिए।
8. महाकवि भारवी के काव्य कौशल पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
9. किरातार्जुनीयम के द्वितीय सर्ग की कथा संक्षेप में वर्णित कीजिए।
10. काव्य जगत में भारवी का स्थान निरूपित कीजिए।
11. किरातार्जुनीयम के प्रधान रस को उदाहरण के साथ बताइये।
12. काव्य दोषो पर प्रकाश डालिए।
13. काव्य का लक्षण स्पष्ट कीजिये।
14. साहित्य क्या है? विवेचना कीजिये।
15. कथा एवं आख्यातिका में क्या अन्तर है? स्पष्ट कीजिये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–

किन्ही दो श्लोको की व्याख्या कीजिए–

1. अथानुरूपाभिनिवेशतोषिणा
   कृताभ्यनुज्ञा गुरूणा गरीयसा
   प्रजासु प्श्चात् प्रथितं तदाख्यया
   जगााम गौरी शिखरं शिखण्डिमत्।
2. विरोधिसत्वोज्झितपूर्वमत्सरं
   द्रुमैरभीष्टप्रसावर्चितातिथि।
   नवोऽजाभ्यन्तरसम्भृतानलं।
   तपोवनं तच्च बभूव पावनम्।
3. पतत्पड्गप्रतिम स्तपोनिधिः
   पुरोऽस्य यावन्न भुति व्यलीयत।
   गिरे स्तडित्वानिक तावदुच्चकै–
   र्जवेन पीठादुरतिष्ठरच्युतः।

4. तमर्ध्यामर्ध्यदिकयाऽदिपुरूषः
सपर्यया साधु स पर्यपूपुजत्।
गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो,
भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणां।

संस्कृत व्याख्या कीजिए–

1. विधुरं किमतः परं
परेरवगीतां गमिते दशामिमाम्।
अवसोदति मत्सुरैरपि
त्वयि सम्भावितवृत्ति पौरूषम्।
2. किममक्ष्य फलं पमोधरान
ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः
प्रकृति सा खलु महीयसः
स्हते नान्य समन्नति यया।

बी0 ए0 प्रथम वर्ष
संस्कृत साहित्य (द्वितीय प्रश्न पत्र)

लघुउत्तरीय प्रश्न :–

1. माहेश्वर सभी सूत्रो को लिखिये।
2. उच्चैरूदातः सूत्र की व्याख्या करै।
3. ससजुषे रूः सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिये।
4. भूवादयोधावतः को सिद्ध कीजिये
5. हर इह में सूत्र प्रयोग कीजिये।
6. आद्गुणः सूत्र की व्याख्या कीजिये।
7. वृद्धि रेचि सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिये।
8. उपसार्गादृतिधातौ को उदाहरण सहित लिखिये।
9. टि संज्ञा विधायक सूत्र की व्याख्या कीजिये।
10. स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र का अर्थ प्रयोग सहित लिखिये।
11. तोर्लिः सूत्र की व्याख्या कीजिये।
12. रामष्टीकते प्रयोग को सूत्र पूर्वक स्पष्ट कीजिये।
13. हरि वन्दे प्रयोग मे सूत्रोल्लेख कीजिये।
14. छे च सूत्र की व्याख्या कीजिये।
15. हशि च सूत्र की व्याख्या कीजिये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–

1. महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण कीजिये।
2. महाकवि बाणभट्ट की गद्य शैली का विस्तृत वर्णन कीजिये।
3. संस्कृत नाटको का उद्भव एवं स्थिति का स्पष्ट वर्णन कीजिये।
4. माधे सन्ति त्रयो गुणाः का विस्तृत वर्णन कीजिये।

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजियेः–

मैं बुन्देलखण्ड क्षेत्र का निवासी हूँ। बुन्देलखण्ड में ही झाँसी महानगर है। झाँसी नगर में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय स्थिति है। बुन्देलखण्ड वीरो की भूमि है जिन्होने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अपने प्राणो का बलिदान किया है। शूरवीरो एवं वीरांगनाओ में राजा बुन्देला एवं वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई तथा झलकारी बाई का नाम जगजाहिर है।

बी0 ए0 द्वितीय वर्ष
संस्कृत साहित्य (प्रथम प्रश्न पत्र)

लघुउत्तरीय प्रश्न :–

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अंक का कथासार लिखिये।
2. कालिदास का प्रकृति सौन्दर्य शाकुन्तल नाटक के विशेष सन्दर्भ में निरूपित कीजिये।
3. कालिदास की कृतियो का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
4. दुष्यन्त के चरित्र की समीक्षा नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् के सन्दर्भ में कीजिये।
5. यमक और श्लेष अलंकार की परिभाषा बताते हुये दोनों में अन्तर स्पष्ट कीजिये।
6. उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण दीजिये।
7. प्रसाद गुण की परिभाषा एवं उदाहरण दीजिये।
8. वैदर्भी रीति का लक्षण एवं उदाहरण दीजिये।
9. कीलिदास का काव्य सौन्दर्य निरूपण कीजिये। संक्षेप में।
10. अपरिणामोपशमो दारूणो लक्ष्मी मदः सूक्ति की व्याख्या सन्दर्भ सहित कीजिये।
11. सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्त करण प्रवृत्तयः सूक्ति की व्याख्या कीजिये।
12. शिखरणी छन्द का उदाहरण एवं लक्षण बताइये।
13. बाणभट्ट का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
14. संस्कृत गद्य साहित्य के किन्ही दो गद्यकारो का परिचय दीजिये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–

विस्तृत व्याख्या कीजिये–

अध्याकान्ता वसतिरमुनाऽप्याश्रमें सर्वभोग्ये
रक्षायोगाादयमपि तपः प्रत्यहं सविनोति अस्यापि
द्यांस्पृशति वशिनश्चारण द्वन्द्वगीतः पुण्यःश्ब्दो
मुनिरीति मुहु केवलं राजपूर्वः।

सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिये–

गुरूपदेशश्च नाम पुरूषाणामखिलमल–प्रक्षाल क्षममजलं स्नानम् अनुपजात–पलिता दिवैरूप्यजरं वृद्धत्वम् अनारोपित मेदादोषं गुरूकरणम् असुवर्ण विरचनमग्राम्यं कर्णाभरणम् अतीतज्योतिरालोकः नोद्वेगकरः प्रजागरः। विशेषेण राज्ञाम् विरला हि तेषामुपदेष्टारः। प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनो